मानस की स्तुतियाँ और नक्षत्र मण्डल सम्बन्ध

मेधा नैलवाल*

शोध सारांश

कविकुल चूड़ामणि मानस रचयिता अतिमानुष अलौकिक काव्य प्रतिभा से आलोकित करने वाले तुलसीदल के समान काव्य की सुगन्ध को फैलाने वाले श्रीमद् तुलसीदास शिरोमणि जी ने रामचरितमानस में भगवान राम जी के चरित्र का अवगाहन करते हुए मानस में अठ्ठाईस स्तुतियों की रचना की है। ये अठ्ठाईस नक्षत्रात्मक अश्विनी से प्रारम्भ होकर अभिजित् सहित रेवती नक्षत्र के साथ सम्बन्धित हैं। इनका फल भी नक्षत्रानुसार ही है। नक्षत्रात्मक स्तुति का संकेत मानसकार ने रामचरितमानस में मानस महात्म प्रकरण में **सुकवि सरद नभ मन उडगन से। राम भगत जग जीवन धन से।।**[1] में दिया है। सुकविरूपी शरद ऋतु के मनरूपी आकाश को सुशोभित करने के लिए तारागण के समान और श्रीराम जी भक्तों के तो जीवन धन ही हैं। रामचरितमानस की अठ्ठाईस स्तुतियों का अठ्ठाईस नक्षत्रों के साथ सम्बन्ध किस प्रकार है इसका प्रकरण उपरोक्त चौपाई के उडगन अर्थात् तारा शब्द से प्रस्फुटित होता है। नक्षत्र मण्डल और मानस की प्रथम स्तुति बालकाण्ड दोहा 186 में ब्रह्मदेवकृत स्तुति से प्रारम्भ होकर अन्तिम अठ्ठाईसवीं स्तुति उत्तरकाण्ड में श्रीराम निर्वाण समय में दोहा 51 में नारदकृत स्तुति है। अश्विनी से लेकर रेवती इन 28 नक्षत्रों को नक्षत्रमण्डल कहा जाता है। जिस प्रकार ज्योतिषशास्त्र में नक्षत्रों का फल पैदा होने वाले जातक पर पड़ता है उसी प्रकार मानस की 28 स्तुतियों की फलश्रुति बालकाण्ड (दोहा 32/2 से दोहा 32क तक) क्रमशः प्रदर्शित की है। इन स्तुतियों का फल और प्रभाव भी नक्षत्रों के अनुसार ही होता है।

मुख्य शब्द– स्तुति (प्रार्थना/प्रशंसा), चूड़ामणि (श्रेष्ठ), अतिमानुष (अलौकिक) नक्षत्र (तारा), फलश्रुति (सत्कर्म विशेष का फल बताने वाला वाक्य)।

शोधपत्र अध्ययन के उद्देश्य : इस शोधपत्र का उद्देश्य आकाशमंडल के नक्षत्रों का मानस की स्तुतियों से संबंध एवं उन स्तुतियों के पठन–पाठन से होने वाले लाभों से सुधि पाठकों को अवगत कराना है।

शोध पद्धति : प्रस्तुत शोध आलेख में विभिन्न ज्योतिष ग्रंथों, रामचरित मानस एवं उससे संबंधित पुस्तकों का गूढ़ अध्ययन कर शोध की विश्लेषणात्मक पद्धति को अपनाया गया है।

मानस की स्तुतियाँ और नक्षत्र मण्डल सम्बन्ध : ज्योतिषशास्त्र ग्रन्थों के अनुसार प्रथम नक्षत्र का नाम **अश्विनी** है अर्थात् घोड़ी। जिस प्रकार घोड़ी उछल उछल कर चलती है उसी प्रकार नभ मण्डल में बहुत तारों के समूह से इस प्रकार का आकार बनता है। इसी नक्षत्र के समान मानस की प्रथम यानी ब्रह्मदेवकृत स्तुति है–

जय जय सुरनायक जन सुखदायक, प्रनतपाल भगवंता।।
गो द्विज हितकारी जय असुरारि, सिंधुसुता प्रिय कंता।।
.....नमत नाथ पद कंजा।।[2]

गोस्वामी जी ने नभमण्डल के अश्विनी नक्षत्र के समान ही इस स्तुति में भगवान के विविध स्वरूपों का व्यापक दृष्टि से वर्णन किया है। स्तुति के प्रत्येक अक्षर में घोड़ी सी चाल है। उच्चारण में उछाल की गति उत्पन्न होती है जैसे– नायक–दायक, कारी–रारी, धरनी–करनी, पाला–याला, नासी–वासी, तीतं–नीतं आदि आदि। अश्विनी नक्षत्र में तीन तारे हैं। 'तारात्रयेणाअश्विनीमुखं भमाद्यम्'[3]। इसी प्रकार स्तुति में सगुण निराकार ब्रह्म, श्री नारायण भगवान और विष्णु भगवान ये तीन तारे हैं। इस पहले नक्षत्र का मुख अश्वमुख जैसा है। स्तुति में भी सिंधुसुता का बन्धु उच्चैःश्रवा का सुन्दर मुख यह अर्थ सिद्ध होता है। फलित ज्योतिषानुसार अश्विनी नक्षत्र में पैदा होने वाला जातक सुन्दर और सौभाग्ययुक्त होता है। उसी प्रकार स्तुति के अनुसार निर्गुण ब्रह्म, सगुण साकार राम जी के रूप में प्रकट होगा। श्री राम जी का सौन्दर्य जगतविदित है और इस स्तुति के गायन से सौभाग्य की प्राप्ति होती है, यथा–**जय मंगल गुन ग्राम राम के**[4]।

ज्योतिषशास्त्रानुसार दूसरा नक्षत्र **भरणी** है। 'भरणी घोषके ऋक्षे'[5] ऋक्ष अर्थात् नक्षत्र, घोषक अर्थात् घोषणा करने वाला। मानस की दूसरी स्तुति कौशल्या जी कृत–**भये प्रकट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी से**। यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा।।[6] भरणी नक्षत्र अर्थात् घोषणा करना, कौन सी घोषणा, यानि प्रभु के प्रकट होने की

* अतिथि व्याख्याता, हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग, डी0 एस0 बी0 परिसर, नैनीताल

घोषणा कौशल्या माता ने की है इसलिए इस स्तुति का भरणी नक्षत्र के साथ साम्य है। भरणी नक्षत्र का आकार योनि के समान होता है। इसमें तीन तारे होते हैं। योनि अर्थात् जन्म स्थान, कारण। यह स्तुति अजन्मा के जन्म कारण, भगवान का जन्म स्थान कौशल्या जी। कौशल्या जी ने ही यह स्तुति की है। जातकाभरणानुसार भरणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सत्यवादी, वचन का धनी और निरोग होता है। इसी प्रकार मानस की इस दूसरी स्तुति की फलश्रुति–**दानिमुकुति धन धरम धाम के**।[7] अर्थात सत्य प्रतिज्ञ श्री राम जी की स्तुति से निरोगता, भोग और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

ज्योतिष में तीसरा नक्षत्र **कृतिका** है और इसी क्रम में मानस की तीसरी स्तुति अहल्या कृत –**परसद पद पावन सोक नसावन प्रकट भई तप पुंज सही। से लेकर जो अति मन भावा सो बरूपावा गई पतिलोक अनंद भई।।**[8] **'कृतिका कृत्यते इति कृतिःकृती खेदन'**[9] अर्थात काट–छाट डालने वाली। इस स्तुति ने अहल्या की पाप, शाप, ताप, शोक, भय, भव इन सब को काट डाला है अतः स्तुति का साम्य कृतिका नक्षत्र के साथ होता है। 'खुराम षडभि'[10] कृतिका नक्षत्र में आकाश में छः तारे दिखते हैं। मानस स्तुति मे क्रमशः (1) रघुनायक (2) प्रभु (3) रघुपति (4) रघुराई (5) हरि भव मोचन (6) कृपाल हरि (7) हरिचरण ये सात तारे हैं। ये 6/7 चमक हैं। प्रभु नामक तारा सबसे चमकदार है। इस नक्षत्र का आकार घोड़े की खुर के समान है। स्तुति में हरि चरण घोड़े की टाप के समान है। टाप से उड़ने वाली धूल प्रभु चरण रज, अहल्यारूपी नारी जो पत्थर बन बैठी थी प्रभु चरण रज से उद्धार हो गया। कृतिका नक्षत्र का देवता अग्नि है। इस स्तुति का मूल कारण भी गौतम ऋषि की क्रोधाग्नि तो है। जातकाभरणानुसार कृतिका नक्षत्र में पैदा होने वाला जातक तेजस्वी, दानी, धार्मिक बुद्धि, अच्छा कुलीन होता है। इस स्तुति की फलश्रुति– **सदगुरू ज्ञान विराग जोगके।**[11] स्तुति में अहल्या को ज्ञान की प्राप्ति और श्राप की निवृत्ति हुई है। अतः जो भी मनुष्य इस स्तुति का मनन–पठन–पाठन करेंगे उन्हे सदगुरू के समान वैराग्य, ज्ञान और भक्ति योग की प्राप्ति होगी।

ज्योतिषशास्त्रानुसार चौथा नक्षत्र **रोहणी** है। मानस में चतुर्थ स्तुति परशुराम कृत– **जयरघुवंश बनज बन भानू। गहन दनुज कुल दहन कृसानु।।** से **कहि जय जयजय रघुकुल केतू।।**[12] रोहणी नक्षत्र में पांच तारे हैं एक अस्पृष्ट दीखता है। मानस की इस स्तुति में भी परशुराम जी का मोह, भ्रम, क्रोध, मद और अबिनय ये पांच तारे हैं। जिसमें अबिनयरूपी तारा अस्पष्ट है। रोहणी नक्षत्र का आकार शकट रथ की तरह है। स्तुति के शब्द शीलकेतु, भानू, दनुजकुल, दहन, सुरधेनु, हित, महेश, कृसानू, विप्रहित आदि भी रथमय आकार बना रहे हैं। अतः इस स्तुति का साम्य रोहणी नक्षत्र से हो रहा है। इस स्तुति की फलश्रुति–**बिबुध बैद भव भीम रोग के।**[13]

पांचवां नक्षत्र आकाश में **मृगशिरा** है। मानस में पांचवीं स्तुति सुनयनाजी द्वारा इस प्रकार है– **करि बिनय सिय रामहि समरपी जोरि कर पुनि पुनि कहै।** से **दोष दलन करूनायतन।**[14] मृगशिरा नक्षत्र का आकार मृग के मुख सा है। इसमें तीन तारे हैं। देवता चन्द्रमा है। स्तुति में (1) सिय रामहि समरपी (2) कर जोरि विनय (3) चरन गहिरहीं ये तीन पद तीन तारे के समान हैं।

व्योम में छटा नक्षत्र **आर्द्रा** है। मानस में छटी स्तुति **जोरि पंक रूह पानि सुहाए। बोले बचन प्रेमजनु जाए।।**[15] जनक जी कृत केवल एक चौपाई में है। धन्य है कवि कुल चूड़ामणि तुलसी जी जिन्हें नक्षत्रों का भी अद्भुत ज्ञान था। स्तुति एक ही पद में है क्योंकि आर्द्रा नक्षत्र में एक ही तारा होता है। आर्द्रा का अर्ब गीला है। सीता जी को राम जी को सौंपते हुए आंखे गीली हैं जनक जी की, प्रेम रस टपक रहा है। नक्षत्र के देवता शिव हैं। स्तुति में राम जी के आराध्य भी शिव हैं। स्तुति फलश्रुति–**जनक सिय राम प्रेम के।**[16] प्रेम पूर्वक स्तुति करने से श्री सीताराम चरणों में प्रेम होगा।

आकाश में सातवां नक्षत्र **पुनर्वसु** है। मानस में सातवीं स्तुति भारद्वाजकृत–**आज सुफलतपु तीरथ त्यागू।** से **निजपद सरसिज सहज सनेहू।।**[17] है। पुनर्वसु का अर्थ है 'पुनःवसु'। वसु=धन, रत्न भारद्वाज मुनि के हृदय में राम रूपी धन पहले ही विद्यमान हैं, आज एक रात्रि के लिए पुनः बसने, रहने के लिए राम जी पधारे हैं। मुनिधन जन सरबस सिव प्राना[18] प्रमाण है। स्तुति और नक्षत्र में साम्य है। पुनर्वसु नक्षत्र में चार तारे हैं। इसी प्रकार स्तुति में (1) छल विहीन कर्म (2) उपासना (3) ज्ञान (4) भाव भक्ति ये चार तारे हैं। नक्षत्र देवता देव माता अदिति हैं। मानस में कस्यप अदिति तहां पितुमाता है। फलश्रुति–**बीज सकल धरमनेम के**[19] अनन्य भक्ति की प्राप्ति।

नभ मण्डल में आठवां नक्षत्र **पुष्य** है। मानस में आठवीं स्तुति बाल्मीकि मुनि जी कृत है जो सबसे लम्बी है, यथा– **सहज सरल मुनि रघुवर बानी।**[20] पुष्य अर्थात् पुष्यामि कार्याणि– कार्य का पोषण करने वाला। ज्योतिषानुसार पुष्य नक्षत्र में किया शुभ कार्य कभी असफल नहीं होता। पुष्य नक्षत्र सभी नक्षत्रों में श्रेष्ठ है। इसी प्रकार बाल्मीकि जी कृत यह स्तुति अतिश्रेष्ठ, सबके लिए श्रेष्ठ है। पुष्य नक्षत्र में तीन तारे हैं, स्तुति में राम, लक्ष्मण, सीता तीन तारे हैं। नक्षत्र के देवता वाक्यपति हैं। स्तुति के देवता राम जी हैं। फलश्रुति–**समन पाप संताप सोक के।**[21] स्तुति पर विचार करें तो पाप, संताप, शोक, शमन होना ही होना है।

व्योम में नवां नक्षत्र **अश्लेषा** है। मानस में नवीं स्तुति अत्रि कृत है, यथा–नमामि भक्तवत्सलं। कृपालुशील कोमलं।।[22] नग स्वरूपिणी छन्द में यह स्तुति लिखी है। स्तुतियों में नग स्वरूप स्तुति है। अश्लेषा=आलिगंन। अत्री जी का शरीर भगवान का आलिगंन कर रहा है। अश्लेषा नक्षत्र में छः तारे हैं। नक्षत्र का आकार चक्र जैसा है। स्तुति में नमामि शब्द छः बार आकर चक्र बना रहा है। अतः स्तुति नक्षत्रानुसार ही लिखी है। फलश्रुति–**प्रिय पालक परलोक लोक के।**[23] यह स्तुति लोक और परलोक में सुखद फलदायी है।

नभ मण्डल में दसवां नक्षत्र **मघा** है। मानस में दसवीं स्तुति शरभंग कृत है, यथा–**कह मुनि सुनु रघुवीर कृपाला।** से **मम हियं बसहु निरंतर सगुन रूप श्रीराम।**[24] मघा नक्षत्र में पांच तारे हैं। स्तुति में (1) रघुवीर कृपाला (2) प्रभु (3) नाथ (4) देव और (5) श्रीराम पांच तारे हैं। अतः स्तुति और नक्षत्र में साम्यता है। स्तुति फलश्रुति–**सचिव भूपति विचार के**[25] स्तुति में शरभंग जी विचार भूपति हैं उनको हरिपद प्रीतिरूपी सचिव ने बारंबार नीति सिखाई है।

आकाश मण्डल में ग्यारहवां नक्षत्र **पूर्वाफाल्गुनी** है। मानस में ग्यारहवीं स्तुति सुतीक्ष्ण कृत है। इस स्तुति में सगुण रूप को प्रधानता देकर निर्गुणरूप को असार अर्थात् फल्गु बताया है। **स्तुति कह मुनि प्रभु सुनु विनती मोरी। अस्तुति करौं कवन विधि तोरी।।** से **ममहिय गगन इंदु इवबसहु सदा निहकाम।।**[26] नक्षत्र में दो तारे हैं, वैसे ही स्तुति में महिमा और रूप ये दो तारे हैं। फलश्रुति–**सचिव सुभट भूपति विचार के।**[27]

नभ मण्डल में बारहवां नक्षत्र **उत्तराफाल्गुनी** है। मानस में बारहवीं स्तुति कुम्भज ऋषि कृत – **मुनि मुस्काने सुनि प्रभु बानी। पूछेहु नाथ मोहि का जानी।** से **कीजे सकल मुनिन्ह पर दाया।।**[28] इस स्तुति में माया जनित ब्रह्माण्डों का अत्यन्त फल्गुत्व अर्थात् असारता को गूलर के फलों से दिखाया है। निर्गुण ब्रह्म, सगुण ब्रह्म का पूर्व रूप और ब्रह्माण्ड उत्तर रूप है। ब्रह्माण्ड की निसारता के कारण यह स्तुति उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र से साम्यता रखती है। स्तुति में राम और रघुराई दो मुख्य तारे हैं। नक्षत्र में भी दो ही तारे हैं। फलश्रुति–**कुंभज लोभ उदधि अपार के।**[29]

ज्योतिषशास्त्रानुसार नभ में तेरहवां नक्षत्र **हरन्त** है। मानस में तेरहवीं स्तुति जटायु कृत–**जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुन प्रेरक सही। तेहि की क्रिया यथोचित निजकर कीन्ही राम।।**[30] इस स्तुति में श्रीराम जी ने अपने हाथ से पलासा और अपने ही हाथों से गीध की क्रिया की। नक्षत्र का नाम भी हरन्त है। धन्य हैं गोस्वामी जी कितनी सुन्दर स्तुति और नक्षत्र में साम्यता है। नक्षत्र का आकार हाथ जैसा और तारों की संख्या पांच है। स्तुति में भी (1) निर्गुण रूप (2) सगुण रूप (3) नाम (4) गुण और (5) महिमा ये पांच तारें चमक रहे हैं। फलश्रुति–**काम कोह कलिमल करिगन के। केहरि सावक जन मन बनके।।**[31]

आकाश में चौदहवां नक्षत्र **चित्रा** है। मानस में चौदहवीं स्तुति हनुमान जी कृत–**पुनि धीरजु धरि अस्तुति कीन्ही।** से प्रारम्भ होकर **पुनि प्रभु मोहि बिसारेउ दीनबन्धु भगवान।।**[32] नक्षत्र चित्रा और स्तुति में भगवान को पहचान कर हनुमान जी भी चित्रवत् हो जाते हैं। नक्षत्र में एक तारा यहां हनुमान जी भी एक। नक्षत्र विशुवत् वृत्त में स्तुति भी किष्किंधा काण्ड अर्थात् मानस के बीच में। फलश्रुति–**अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के**[33] जैसे राम जी को शिव जी प्रिय हैं उसी प्रकार स्तुति पाठ से राम जी की प्रियता प्राप्त होगी ।

नभ मण्डल में पन्द्रहवां नक्षत्र **स्वाति** है। मानस में 15वीं स्तुति बिभीषणकृत है, यथा–**पद अबुंज गहि बारहिं बारा।** से **सुमन वृष्टि नभ भई अपारा।।**[34] नक्षत्र स्वाति अर्थात् स्व+अति। स्तुति में बिभीषण को राम जी प्राणों से अति प्रिय हैं। नक्षत्र में एक तारा है। स्तुति में शरणागति एक ही तारा है। फलश्रुति–**कामद घन दारिद दवारिके।**[35] स्तुति व्यक्ति को पूर्ण काम बना देगी। नक्षत्र आकार विद्रुम के समान है। विद्रुम, क्रूर ग्रह, मंगल का रत्न है। स्तुति में विभीषण, क्रूर रावण का भाई है। नक्षत्र और स्तुति में साम्यता है।

नभ में सोलहवां नक्षत्र **विशाखा** है। मानस में सोलहवीं स्तुति आये देव सदा स्वारथी। **बचन कहहिं जनु परमारथी।।** से **अब प्रभु पाहि सरन अनुसरे।**[36] विशाखा अर्थात् अनेकों शाखाओं वाला। स्तुति में भी स्तुति करने वाले देवों की अनेकों शाखायें हैं। वसु, रूद्र, अग्नि आदि। विशाखा नक्षत्र में चार तारे हैं, वैसे ही स्तुति में भी (1) रघुराया (2) देव (3) नाथ (4) प्रभु ये चार तारे हैं। नक्षत्र चित्रपट में विशाखा नक्षत्र का आकार तोरणाकार है। तोरण ऊंचा–नीचा रहता है वैसे ही स्तुति के वचन सुसंबद्ध नहीं हैं। फलश्रुति–**मन्त्र महामनि विषय ब्याल के।**[37] अर्थात भक्ति से राम नाम रूपी चिन्तामणि की प्राप्ति होती है।

नभ मण्डल में सत्रहवां नक्षत्र **अनुराधा** है। मानस में सत्रहवीं स्तुति ब्रह्मदेवकृत है, यथा–**जय राम सदा सुख धाम हरे। रघुनायक सायक चाप धरे।।** से **सोभा सिंधु विलोकत लोचन नहीं अघात।।**[38] अनुराधा नक्षत्र में चार तारे

हैं। स्तुति में (1) नाम (2) रूप (3) लीला और (4) धाम ये चार तारे हैं। फलश्रुति–**मेटत कठिन कुअंक भाल के।।**[39] इस स्तुति के प्रेम पूर्वक पाठ से विधि द्वारा लिखा कुअंक मस्तक से मिट जायेगा।

आकाश में अठारहवां नक्षत्र **ज्येष्ठा** है। मानस की अठारहवीं स्तुति इन्द्रकृत है, यथा–**अनुज जानकी सहित प्रभु कुशल कोसलाधीश। सोभा देखि हरषि मन अस्तुति कर सुर ईस।। अब करि कृपा बिलोकि मोहि आयसु देहु कृपाल। काह करौं सुनिप्रिय वचन बोले दीन दयाल।।**[40] नक्षत्र का नाम ज्येष्ठा है और स्तुति देवों में ज्येष्ठ–श्रेष्ठ इन्द्र ने की है। ज्येष्ठा नक्षत्र में तीन तारे हैं, स्तुति में (1) सगुण ब्रह्म की रूचि (2) भक्ति याचना (3) और कृपा दृष्टि याचना मुख्य तीन बातें तीन तारे हैं। फलश्रुति–**हरन मोह तम दिनकर से।**[41] अभिमान, भय, द्वन्द्व आदि सब मोह रूपी तम से पैदा होते हैं। श्रीराम चरणों के प्रभाव से इनका नाश होता है।

नभ में उन्नीसहवां नक्षत्र **मूल** है। मानस में उन्नीसहवीं स्तुति शंभु कृत है, यथा–**देखि सुअवसर प्रभु पहिं आयउ संभु सुजान। से कृपा सिंधु मैं आउब देखन चरित उदार।।**[42] नक्षत्र मूल, स्तुति करने वाले शिव भी राम भक्तों के मूल हैं। नक्षत्र में ग्यारह तारे हैं। स्तुति में भी (1) प्रभजन (2) अनल (3) मन्दिर (4) दिवाकर (5) पंचानन (6) तुषार (7) मन्दर (8) कुशल कर्णधार (9) राजीव (10) मंडन और (11) सिंधु, ये ग्यारह शब्द 11 तारे हैं। फलश्रुति–**सेवक सालि पाल जलधर से।।**[43] इस स्तुति का सप्रेम पाठ करने से श्रीराम जी पालन–पोषण और संरक्षण करेंगे।

आकाश में बीसवां नक्षत्र **पूर्वाषाढ़ा** है। मानस में बीसवीं स्तुति वेदकृत है, यथा–**जय सगुन निर्गुन रूप अनूप सिरोमने।** से लेकर **सबके देखत वेदन्ह बिनती किन्हि उदार।। अंतर्धान भए पुनि गए ब्रह्म आगार।।**[44] नक्षत्र पूर्वाआषाढ़ा, आषाढ़=पूर्णिमा (मेदनी)। नक्षत्र में चार तारे हैं। स्तुति में भी (1) नमामहे (2) समरामहे (3) भजामहे (4) अनुरागहीं ये चार तारे हैं। नक्षत्र का देवता जल (शीतलता) है। इसी प्रकार स्तुति का अनुष्ठान सुख प्रदान करने वाला है। फलश्रुति–**अभिमत दानि देवतरू बर से।**[45] कल्पवृक्ष के समान सभी कामनाओं की पूर्ति करने वाली स्तुति है।

ज्योतिषानुसार व्योम में इक्कीसवां नक्षत्र **उत्तराषाढ़ा** है। मानस की 21वीं स्तुति शंभु कृत है, यथा–**जय राम रमा रमनं समनं। भव ताप भयाकुल पाहिजनं।। बरनि उमापति राम गुन हरषि गये कैलास।।**[46] नक्षत्र में तीन तारे हैं, स्तुति में (1) भजे (2) जपामि (3) नमामि तीन तारे हैं। यह स्तुति जन्म–मृत्यु के दुःख से रक्षा करने के लिए है। नक्षत्र के देवता विश्वेदेव हैं। स्तुति कर्ता भी सर्वदेवाधिदेव महादेव हैं। फलश्रुति–**सेवत सुलभ सुखद हरि हरसे।**[47] अर्थात हरि कृपा से ही हर की प्राप्ति सुलभ है।

आकाश में बाईसवां नक्षत्र **अभिजित्** है। नित्य की गणना में इस नक्षत्र की गणना नहीं होती है लेकिन धार्मिक अनुष्ठान में इसकी गणना की जाती है। उत्तराषाढ़ा के 3 अंश 20 कलाएं तथा श्रवण की प्रारम्भ की 800/95 कलाएं मिलकर अभिजित् नक्षत्र कहलाता है। उसी प्रकार मानस में 22वीं स्तुति सुग्रीवादि कृत–**सुनि प्रभु बचन मगन सब भए से पुनि पुनि चरन सरोज निहारहिं।**[48] अभिजित् नक्षत्र अप्रत्यक्ष है उसी प्रकार यह स्तुति भी अप्रत्यक्ष है। नक्षत्र में तीन तारे हैं, स्तुति में भी (1) सुग्रीव (2) विभीषण (3) जाम्वान ये तीन तारे हैं। फलश्रुति–**सुकवि सरद नभ मन उडगन से।**[49]

नभ मण्डल में तेईसवां नक्षत्र **श्रवण** है। मानस में तेइसवीं स्तुति अंगद कृत है, यथा–**तब अंगद उठि नाइ सिरू सजल नयन कर जोरि।** से **बिदा कीन्हि भगवान तब बहु प्रकार समुझाई।।**[50] नक्षत्र श्रवण और स्तुति का प्रारम्भ भी सुनु से हुआ है। नक्षत्र में तीन तारे हैं। स्तुति में (1) पद जल जाता (2) पदपंकज (3) चरन तीन तारे हैं। नक्षत्र के देवता गोविन्द हैं। स्तुति भी राम जी गोविन्द से ही है। फलश्रुति–**राम भगत जन जीवन धन से।**[51] स्तुति के पाठानुष्ठान से रामधन की प्राप्ति और राम जी का कृपा प्रसाद प्राप्त होगा।

आकाश में चौबीसवां नक्षत्र **धनिष्ठा** है। मानस में 24वीं स्तुति अयोध्या पुरजन वासियों द्वारा की गई है, यथा–**जहं तहं नर रघुपति गुन गावहिं। बैठि परसपर इहइ सिखावहिं।।** से प्रारम्भ होकर **मुनि रंजन भंजन महि मारहिं। तुलसीदास के प्रभुहि उदारहिं।।**[52] नक्षत्र नाम धनिष्ठा अर्थात सबसे धनवती। स्तुति में अयोध्या नगरी सबसे अधिक धनवती है इसलिए नाम में साम्यता है। नक्षत्र में चार तारे हैं। स्तुति में (1) शोभाधाम (2) शीलधाम (3) रूपधाम (4) गुणधाम ये चार तारे हैं। नक्षत्र का देवता वसु है अर्थात् संपत्ति। स्तुति में अयोध्या अणिमादिक सम्पदा से भरपूर है। फलश्रुति–**सकल सुकृत फल भूरिभोग से।।**[53] स्तुति का पाठानुष्ठान धनैश्वर्यादि प्राप्ति में सहायक है।

आकाश में पच्चीसवां नक्षत्र **शतभिषा** है। मानस में 25वीं स्तुति सनकादि मुनियों द्वारा की गई है, यथा–**सुनि प्रभु बचन हरषि मुनि चारी। पुलकित तन अस्तुति अनुसारी।।** से **प्रेम भगति अनपायनि दहु हमहि श्रीराम।।**[54] शतभिषा अर्थात् सैकड़ों औषधि वाला। स्तुति में सनकादि मुनियों द्वारा सब रोगों की जड़ भवरोग को मिटाने वाली दवा अर्थात् मुनिकृत

स्तुति। नक्षत्र का देवता वरूण। नक्षत्र में एक तारा है। सभी मुनियों द्वारा एक ही स्तुति की गई है। फलश्रुति–**जग हित निरूपाधि साधु लोग से।**[55] इस स्तुति में मायारहित निष्कपटता का भाव है।

नभ मण्डल में छब्बीसवां नक्षत्र **पूर्वाभाद्रपदा** है। मानस में 26वीं स्तुति भी अयोध्यावासियों द्वारा की गई है, यथा–**सुनत सुधा सम बचन राम के। गहे सबनि पद कृपाधाम के।।** से **बसत प्रभु बतकही सुहाई।।**[56] नक्षत्र नाम भद्र अर्थात् कल्याण, मोक्ष। स्तुति स्वयं मोक्ष का साधन भगवान श्रीराम जी के श्रीमुख से हुई है। नक्षत्र में दो तारे हैं। उसी प्रकार स्तुति में (1) भगवान असुरारि और (2) उनके सेवक दो तारे हैं। नक्षत्र और स्तुति में साम्यता है। फलश्रुति–**सेवक मन मानस मराल से।**[57] स्तुति करने से मन मानस में श्रीराम चन्द्र रूपी हंस विराजमान रहता है।

नभ मण्डल में सत्ताईसवां नक्षत्र **उत्तरभाद्रपदा** है। 27वीं स्तुति वसिष्ठकृत है–**एक बार वसिष्ठ मुनि आये।** से **होइहि रघुकुल भूषण भूपा।।**[58] उत्तरभाद्र अर्थात् राम जी के प्रयाण के बाद भी कल्याण बना रहेगा। इस नक्षत्र में दो तारे हैं। स्तुति में (1) प्रभु पद कमल और (2) प्रेमभक्ति ये दो तारे हैं। फलश्रुति–**पावन गंग तरंग माल से।**[59] इस स्तुति का अनुकरण गंगा के समान पवित्र करने वाला है।

नभ मण्डल में अट्ठाईसवां नक्षत्र **रेवती** है और मानस की 28वीं स्तुति नारदकृत है, यथा–**मामवलोकय पंकज लोचन। कृपा बिलोकनि सोच विमोचन।।** से **सोभासिधुं हृदयधरि गए जहाँ बिधि धाम।।**[60] नक्षत्र रेवती अर्थात् गति, स्तुति निजधाम गमन अर्थात् श्रीराम जी के निजधाम गमन के समय की है। इस नक्षत्र में 32 तारे हैं। स्तुति में 32 शब्दगुण 32 तारे हैं। नक्षत्र का देवता पूषा है। पूषन = सूर्य। स्तुति भी राम जी की है। स्तुति और नक्षत्र में साम्यता है। फलश्रुति–**कुपथ कुतरक कुचालि कलि कपट दंभ पाशंड। दहन राम गुन ग्राम जिमि ईधन अनल प्रचंड।।**[61] स्तुति से सभी कलियुग के दोषों के निवारण की प्रार्थना की गयी है।

मूल्यांकन

यहाँ नक्षत्र में तारों की संख्या की गणना ज्योतिषपट और रत्नमाला ग्रन्थों से की गई है। गोस्वामी जी ने स्तुतियों का प्रारम्भ जय जय रघुनायक से कर गए जहाँ विधि धाम पर समाप्त किया है। इस विषय पर पूरा एक लेख लिखा जा सकता है, पाठकगण यदि इच्छा प्रकट करें। प्रेरक हृदि रघुबंस बिभूषन। सबको प्रेरणा देने वाले राम जी की कृपा से मानस स्तुति और नक्षत्र साम्यता लिखने का विचार आया। कवि शिरोमणि गोस्वामी जी की अदभुत काव्य कला में स्वयं शारदा प्रेरित शब्द सौष्ठव है। सूक्ष्मता से विचार करें तो इन स्तुतियों के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन को परिमार्जित और परिष्कृत करते हुए भोग और मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। गोस्वामी जी ने बड़ी ही निपुणता के साथ नक्षत्रानुसार इन स्तुतियों की रचना की है। इस लेख में जो भी अच्छा है वह प्रभु कृपा से है और जो भी ठीक नहीं है वह मेरा पुरूषार्थ है। सुधि पाठकगण विचार कर अपने विचारों से मुझे भी अनुग्रहीत करने की कृपा करें।

सन्दर्भ सूची

1. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32/12, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
2. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 186/01 से 04, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
3. ज्योतिष रत्नमाला
4. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 31/2, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
5. ज्योतिष रत्नमाला
6. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 192/01 से 04, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
7. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32/2, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
8. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 211/01 से 04, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
9. ज्योतिष रत्नमाला
10. ज्योतिष रत्नमाला
11. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32/3, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
12. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 285/01 से 07, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
13. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32/3, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
14. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 336, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर

15. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 341 / 3, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
16. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 4, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
17. रामचरित मानस, अयोध्याकाण्ड दोहा 107 / 05 से 08, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
18. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 198 / 2,गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
19. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 4, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
20. रामचरित मानस, अयोध्याकाण्ड दोहा 126 / 7 से प्रारम्भ होकर 2 / 132, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
21. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 5, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
22. रामचरित मानस, अरण्यकाण्ड दोहा 4 / 01 से 12, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
23. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 6, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
24. रामचरित मानस, अरण्यकाण्ड दोहा 8 / 1 से 6, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
25. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 6, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
26. रामचरित मानस, अरण्यकाण्ड दोहा 11 / 01 से 26, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
27. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 6, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
28. रामचरित मानस, अरण्यकाण्ड दोहा 13 / 04 से 17, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
29. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 6, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
30. रामचरित मानस, अरण्यकाण्ड दोहा 32 / 1, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
31. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 7, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
32. रामचरित मानस, किष्किन्धाकाण्ड दोहा 2 / 7, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
33. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 8, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
34. रामचरित मानस, सुंदरकाण्ड दोहा 49 / 4 से 10, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
35. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 8, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
36. रामचरित मानस, लंकाकाण्ड दोहा 110 / 2 से 12, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
37. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 9, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
38. रामचरित मानस, लंकाकाण्ड दोहा 111, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
39. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 9, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
40. रामचरित मानस, लंकाकाण्ड दोहा 112 से 113, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
41. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 10, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
42. रामचरित मानस, लंकाकाण्ड दोहा 114 क से 115, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
43. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 10, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
44. रामचरित मानस, उत्तरकाण्ड दोहा 13 / 1 से 6, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
45. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 11, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
46. रामचरित मानस, उत्तरकाण्ड दोहा 13 ख से 14 ख, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
47. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 11, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
48. रामचरित मानस, उत्तरकाण्ड दोहा 17 / 01 से 04 से, दोहा17 क, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
49. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 12, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
50. रामचरित मानस, उत्तरकाण्ड दोहा 17 ख से दोहा 18 ख, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
51. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 12, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
52. रामचरित मानस, उत्तरकाण्ड दोहा 30, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
53. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 12, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
54. रामचरित मानस, उत्तरकाण्ड दोहा 34 / 1 से 8, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
55. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 13, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर

56. रामचरित मानस, उत्तरकाण्ड दोहा 47 / 1 से 8, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
57. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 14, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
58. रामचरित मानस, उत्तरकाण्ड दोहा 48 / 1 से 8, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
59. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 / 14, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
60. रामचरित मानस, उत्तरकाण्ड दोहा 51 / 1 से 9, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर
61. रामचरित मानस, बालकाण्ड दोहा 32 क, गोस्वामी तुलसीदास, गीतप्रेस गोरखपुर